ग्राम गौरव संस्थान

वर्ष २०२१-२२ की प्रगति प्रतिवेदन

प्रस्तावना :–

ग्राम गौरव संस्थान अपने मूल उददेश्य मे ग्रामीणो की आजीविका सुद्दढ करने के मिशन के अनुसरण मे अपने उद्गम के जनक समाज आधारित प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण मे वर्षाजल, वन, मृदा संरक्षण के कार्यो मे ओत–प्रोत होकर अपना उद्गम का एक दशक पूरा करने के वर्ष 2021–22 मे एक कदम आगे बढते हुए कार्य करने की योजना मे अपनी कार्य क्षमता को पोषित करने वाले उन बुजुर्ग ग्रामीणो से हमेशा वैचारिक पोषण प्राप्त करने के अनेको अनेक उपलक्ष्यो का आयोजन करता रहता है जन समूदाय के साथ आयोजित आयोजनो मे कार्यो के परिणामो से समाज की आजीविका मे सहजता कुशलता का आंकलन व आगे किस प्रकार के कार्य और जोडा जाये जिससे कार्यो के लाभ की गणना बढ सके और एक आदर्शता स्थापित करते हुए अनेको अनेक क्षेत्रो को कार्यो की उत्कृष्टता की ओर आकर्षित होकर ग्रामीण समाज मे अपने स्थाई प्राकृतिक आधारित सर्वागीण विकास मे सुसंस्कारवान बनाता हुआ सहजकर्ता के रूप मे अपने आप को कायम करे ।

इस श्रृंखला मे वर्ष 2021–22 मे अपनी दानदात्री सहयोगी संस्थाए धर्मपाल सत्यपाल लिमिटेड ,राजीव गांधी फाउन्डेशन के आर्थिक साजे प्रयासो से ग्रामीण समाज के साथ गांव की कुशलता, कौशलता को संवर्धन करने के लिए आये सुझावो को कियान्वित करने मे धर्मपाल सत्यपाल लिमिटेड,व राजीव गांधी फाउन्डेशन के प्रायोजन मे कार्यो की श्रंखला के कदम निम्न प्रकार आगे बढे ।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा वित्तिय वर्ष 2021–22 कि गई गतिविधियॉ ।

1. **वर्षाजल व मृदा संरक्षण कार्यक्रम ।**
2. **धान एवं गेहूॅ संघनीकरण कार्यक्रम ।**
3. **उचित जल प्रबंधन ।**
4. **गरीब भूमिहीन विधवा असहाय परिवारो के आजीविका संवर्धन कार्यक्रम ।**
5. **महिला सशक्तिकरण ।**
6. **पशुधन विकास ।**
7. **शिक्षा ।**
8. **बीज संधारण केन्द्र संवर्धन कार्य ।**

1. वर्षाजल व मृदा संरक्षण कार्यक्रम ।

ग्राम गौरव संस्थान डांग क्षेत्र के गांव में प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण में वर्षाजल एवं मृदा संरक्षण कार्यक्रम के तहत 02 तरह से कार्य कर रहा है ।

1.1 चेतनात्मक कार्य – ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग समाज में जागृति लाने व प्राकृतिक संसाधनो के प्रति आस्थाभाव कायम करने के लिए जनतांत्रिक संगठनो का गठन व बैठक करके श्रृध्दा भाव पैदा करता है इस हेतु निम्न बैठक की गई ।

क्र.स.	गांव का नाम	नुक्कड बैठक	ग्राम संगठन की बैठक
1	ठेकला की झोपडी	10	2
2	अलबतकी	22	10
3	आमरेकी	5	3
4	बरकी	20	3
5	दौलतीयाकी	40	10
6	भौपारा मरमदा	20	10
7	बीचकापुरा	15	4
8	श्यामपुर झोपडी	7	4
9	कसियापुरा	20	5
	योग	159	51

उक्त बैठको में ग्राम गौरव संस्थान एवं समाज द्वारा प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण में परम्परागत तरीको से वनो की रक्षा एवं श्रृध्दा भाव पर चर्चा करते हुए विश्लेषनात्मक अध्ययन किया कि पूर्ण में हमारे पूर्वज वनो को बचाने के लिए देवी देवताओ के नाम से जंगल बचाने का तरीका इजहार किया था इस अच्छी परंम्परा को भावी पिढी तक ले जाने के लिए देवबनियो में समाज की सहभागिता से पौधारोपण करके समाज में पेड़ो के प्रति श्रृध्दा भाव जगाने का कार्य किया गया ।

1.2 रचनात्मक कार्य – ग्राम गौरव संस्थान द्वारा वित्तिय वर्ष 2021–22 में धर्मपाल सत्यपाल लिमिडेट एवं राजीव गांधी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से वर्षाजल एवं मृदा संरक्षण कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए ताल, पोखर, पैगारो का समाज की सहभागिता से निर्माण किया गया जिससे कि 102 लोगो कि आजीविका सूदृढ हो सकेगी । इस हेतु 26 जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ का संवर्धन एवं संरक्षण का कार्य किया जिससे कि 312 बीघा जमीन द्विफसलीय होगी एवं 30 बीघा जमीना मे पर्यावरणीय संरक्षण व सुधार होने से वृक्षो में वृध्दि होगी जिसकी सूची निम्नवत् है ।

वर्ष 2021–22 मे निर्मित वर्षाजल व मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण –

क,स	संरचना का नाम	गांव का नाम	जनसहयोग	संस्थागत सहयोग	लाभार्थी	जमीन बीघा मे	पर्यावरणीय संरक्षण सुधार मे वृक्ष वृदि
1	ढोचर वाली पोखर	ठेकला की झोपडी	30000	239074	5	24	4 बीघा
2	पाच्या वाली पोखर	अलवतकी	105351	212197	9	42	6बीघा
3	कांकन वाली पोखर	अलबतकी	105757	212099	5	12	2 बीघा
4	करण सरोवर	अलवतकी	105259	212189	6	24	3 बीघा
5	बरवारी पोखर	अलवतकी	152659	306402	6	18	6 बीघा
6	बक्कू का पैगारा	आमरेकी	45750	116650	1	3	0.50बीघा
7	सिरमौहर का कुण्डा	गजसिंहपुरा	75516	161759	1	8	1 बीघा
8	खोन्दे वाली पोखर	बीचकापुरा	113550	228185	8	20	0.50बीघा
9	तुरकिया वाली पोखर	बरकी	20000	103653	3	3	0.50बीघा
10	नाऊ वाली पोखर	बरकी	36900	75289	3	6	0.50बीघा
11	भैरो वाली पोखर	बरकी	70770	143899	2	9	0.50बीघा
12	बडे धौक की पोखर	दौलतीयाकी	58982	119454	5	7	0.50बीघा
13	बारी की नरी की पोखर	दौलतीयाकी	114009	231905	6	9	2 बीघा
14	ढमकूला की पोखर	दौलतीयाकी	64322	130133	4	8	
15	पहली घेर की पोखर	दौलतीयाकी	142880	287246	4	14	
16	होन्डर वाला कुण्डा	दौलतीयाकी	35403	72294	3	12	
17	पुरानी पोखर	दौलतीयाकी	21228	43944	3	8	
18	कछरीया वाला पैगारा	भौपारा मरमदा	144800	210268	3	6	1बीघा
19	खारोल का कुआ वाला पैगारा	भौपारा	75500	125448	3	3	0.50 बीघा
20	खैर का पैगारा	भौपारा	85800	89674	3	2	0.50 बीघा
21	खारौल का पैगारा	भौपारा	55600	123855	3	3	0.50 बीघा
22	बन्ध वाला पैगारा	कशीयापुरा	212500	211800	2	8	0.50बीघा
23	लिसाई वाला पैगारा	कशीयापुरा	145800	143820	3	12	0.50बीघा
24	क्रियान वाली पोखर	कशीयापुरा	58075	116555	2	4	1बीघा
25	फाबूला वाली पोखर	श्यामपुर झोपडी	65277	131153	3	12	2बीघा

26	थुवर की भडकिया वाला ताल	श्यामपुर	225960	107400	6	35	5बीघा
		कुल योग	2367648	4156345	102	312	30 बीघा

हर वर्ष संरचना निर्माण की पूरी प्रक्रिया सम्पादित करने मे एक ना एक संरचना के निर्माण मे नया सिखने को मिलता है इस वर्ष भी दो संरचनाओ का वर्तान्त स्मरण योग्य होने के साथ साथ आगे के लिए कौशलता भी बढाता है

बारी की नरी की पोखर ग्राम दौलतीयाकी ग्राम पंचायत कैलादेवी तह. करौली जिला करौली मे पोखर का निर्माण हुआ है बारी की नरी की पोखर दौलतीयाकी गांव की आबादी क्षेत्र मे होने वाली वर्षा का जल बहकर जाने वाली नाली को वारी की नरी कहते है पोखर निर्माण की जगह से ऊपर वाला क्षेत्र जलागम क्षेत्र गांव की आवादी व खेती के काम आता है आस पास के गांवो के अनुसार दौलतीयाकी सहित 05 गांवो को ऊंट की ठूडार पर बसा हुआ मानते है यानी कि ऊंट की सबसे ऊची ठूडार पर पानी या अन्य चीज नही रूक पाती है इसी तरह से दौलतीयाकी सहित पांच गांवो की भौगोलिक स्थिति है पर मारवाडी कहावत को साकार करते हुए (ला फुचा मे पान रे ला फुचा मे पान) हाथो की मेहनत सब जगह रंग लाती है दौलतीयाकी मे ग्राम गौरव संस्थान की प्रेरणा से अपनी अगं मेहनत करके 12 माह का पेयजल आपूर्ती सुनिश्चित करते हुए खाद्धयान आपूर्ती की सुनिश्चिता के लिए प्रयासरत है जबकि बीते वर्षो मे कंठ की प्यास कई कोसो दुर से जल लाकर बुझाई जाती थी वारी की नरी मे वर्षाती पानी संचय होने के बाद अंजान जगहो से बहकर सात सौ मीटर नीचे चटटानो से निकलता इस पानी की चोर निकासी को ढुढने के लिए ग्रामीण भरतू चरतू सहित 1 दर्जन ग्रामीन लोग व संस्थान कार्यकर्ता ठाकूरसिंह गुर्जर कई दिनो तक पत्थरो को देखते समझते और इसी एक निर्णय पर पहुचे और पत्थर फोडने का काम किया पत्थरो की टुटती उखडती परतो से पानी निकासी चोर रास्ते को ढुढने की ओर बढते रहे पहले से कहा से निकलता होगा पानी कैसा होगा वो स्थान इस पर विचार मंथन करके यह माना हुआ था पानी निकासी की जगह काई मिलेगी छोटे छोटे शंक मिलेगे पत्थर मे आवाज टुटे वर्तन जैसी आयेगी । आखिर पत्थरो को तोडते हुए इन अवशेषो पर पहुचे अवशेषो से रूवरू होकर जहा से पानी बैठता बहॉ से पानी भरा गया वह जगह पाल से 50 मीटर ऊपर भराव क्षेत्र मे थी वह पानी वहा आकर निकला ये कार्य बहुत ही विधमान कार्य के प्रति लगाव और अपने मंथन पर विशवास को कायम करता है पोखर कार्य

जब तक हुआ सभी लाभर्थीयो का संस्था कार्यकर्ता एकाग्रह चित से किया गया है अपने आप मे आश्वस्त है पानी रूकेगा पर कही ऐसा भी होगा पानी का कुछ प्रतिशत अन्य चोर रास्ते से निकला तो हितग्राही हिम्मत नही हारेगे ।

तुरकिया वाली पोखर ग्राम बरकी ग्राम पं. कैलादेवी जिला करौली मे स्थित है पोखर के हितग्राही समूह सदस्य खिलारी जी मीना पैर से विकलांग होने पर भी पोखर के निर्मित स्थल के किनारे पिछली गर्मीयो से बडी –बडी चटटानो को चुनौती देने के लिए बाजरा बोने के लिए खेत तैयार करने की जुगत मे पत्थरो को तरह तरह के जतन करके तोड तोड कर खेत का स्वरूप देने के लिए कार्य मे लगा चला आ रहा था रास्ते के पास चटटानो के बीच हलचल मचाकर खिलाडी मीना को खेत बनाते हुए देखकर हर कोई अचम्भित होता दो बीघा के करीब खेत बनने की अवस्था मे आने पर गांव मे होने वाली हर ग्राम संगठन की बैठक मे अपने खेत के किनारे पोखर बनाने की अपील किया करता था आखिरकार तुरकिया वाली पोखर को बनाने का निर्णय हुआ कठिन खुदाई कार्य मे मशीन के साथ मशीन के जैसा जज्बा रखते हुए खिलाडी मीना अपने और साथियो को प्रेरित करता रहा । पोखर के तल मे कही पानी निकासी नही रह जाये इसकी बारिकी से छान बीन करता रहा और इस पोखर मे इस जगह पानी निकलेगा ये भी बताया उसे पानी भरकर प्रमाणित भी किया पानी निकासी की जगह पर इलाज होना सहज हो जाता है पोखर का निर्माण कार्य संम्पादित होने पर खिलाडी मीना काफी उत्साहित दिखता है खिलाडी मीना के यह कठिन जतन सिद्ध करते है अन्न जल की प्राप्ति के लिए कठिन ये कठिन प्रयत्न करना चाहिए अन्न और जल की वर्वादी किसी भी तरह होने नही देगे।

2. धान एवं गेहॅू संघनीकरण कार्यक्रम ।

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा डांग क्षेत्र के गांवो में जल की उपलब्धता बढाने हेतु ताल, पोखर, पैगारो का निर्माण किया है पर डांग के बांशिन्दे परंम्परागत तरीके से ही खेती करते है जिससे कि बीज कि मात्रा अधिक होने पर लागत बढ़ती है खर पतवार अधिक होती है व वर्तमान चलन के अनुसार रासायनिक खादो का उपयोग करने लगे है जिससे कि खेती में लागत बढ़ती जा रही है और जमीन की उर्वरक क्षमता भी कमजोर पड़ रही है इस समस्या से निजात दिलाने के लिए संस्थान द्वारा सामाजिक चेतना लाने हेतु गांवो में नुक्कड सभाए आयोजित करके लोगो को जोड़कर धान व गेहू सघनीकरण विधि से खेती करने के लिए अलख जगाई है एवं ग्राम संगठनो की बैठक करके किसानो का चयन किया गया है जो निम्न प्रकार से है ।

2.1 धान सघनीकरण –

धान सघनीकरण हेतु सामाजिक चेतना कार्य बैठके –

क स	गांव का नाम	नुक्कड बैठके	उपस्थित सदस्य	ग्राम संगठन की बैठक
1	घेरकापुरा	9	120	2
2	बीचकापुरा	10	130	3
3	पाटोर	2	6	1
4	बामूदा	6	40	2
5	मानिकपुरा	5	20	2

डांग क्षेत्र का आधी शताब्दी पूर्वोत्तर डांग क्षेत्र दुध धान की ख्याती प्राप्त स्थल रहा है पूर्वजो के अनुसार डांग मे खूब धान और दुध पैदा होता है दुध और चावल पैदा होना खुशहाल होने का प्रतीक है वक्त के अनुसार वर्षाती दिनो का कम होना मृदा व वर्षाजल संरचनाओ का चलन डांग के अतीत को सुनने पर एक शताब्दी से घटता हुआ चला गया। ग्राम गौरव संस्थान के प्रयासो से निर्मित वर्षाजल संरचनाओ के प्रभाव से बढी पानी की उपलब्धता से ज्यादा लाभ ले सके इसलिए डांग मे धान की पैदावार को बढाने के लिए अच्छी किस्म का बीज और बीज को जमाने से लेकर खेत मे लगाने व पकने तक फसल का रख रखाव किसानो के साथ एक संवाद कायम किया ।

धान का बीज उपचार का प्रशिक्षण –

क स	गांव का नाम	स्थान	सदस्य
1	बामूदा	बृजमोहन के घर	10
2	बीचकापुरा	इन्द्राज के घर	20
3	घेरकापुरा	भरतू के घर	10

- बीज – आज कल के बाजार को डांग की भौगोलिक स्थिति मिटटी ,पानी के अनुसार अनुभवी किसानो के मार्गदर्शन से बीज का निर्णय तय करवाया जो सुगन्धा तय किया ।
- बीज उपचारित – गुनगुना पानी गुड व गौ मूत्र से उपचार करके अकूंरित होने पर बीज जमवाया ।
- क्यारी – बीज को जमाने के लिए साथ साथ गुडाई करके देशी खाद का मिश्रण करके क्यारी तैयार की गई
- पौधो की रखवाडी – डांग के गांवो मे पक्षियो व गिलहरीयो से बचाने के लिए जाल की छाप व चावल के घास से संरक्षण करवाया गया ।
- खेत की तैयारी – धान लगाने के लिए सभी नाले वाले खेतो मे घास उगने के बाद पानी को भराया गया और फिर जोत लगाकर घास को सडाया गया।
- धान लगाना – जुते हुए खेतो मे आठ आठ इंच की दुरी पर पौधारोपण करवाया ।
- कीटनाशक व गिल्ले की संख्या बढाने के लिए अमृत घोल व पंचगव्य बनवाया गया ।
- धान मे बृद्धि – धान पकने पर दोनो तरह के खेतो का मीटर ×मीटर की नाप से धान निकालकर तुलना की गई ।

धान का बीज वितरण –

क,स	गांव का नाम	किसानो की संख्या	बीज की मात्रा किग्रा. मे	जमीन बीघा मे
1	घेरकापुरा	37	360	78
2	बीचकापुरा	85	690	134
3	बामूदा	24	250	48
4	मानिकपुरा	19	190	38
5	पाटौर	1	10	2
	योग –	**166**	**1500**	**300**

2.2 गेहूं सघनीकरण :–

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा गेहू की फसल के उत्पादन में वृध्दि लाने हेतु लोगो के साथ संवाद बैठके आयोजित करके लोगो को गेहू सघनीकरण विधि से गेहू कि खेती करने के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है एवं ग्राम संगठनो व नुक्कड सभाओ के माध्यम से चेतना जागृत कि जाती है जो निम्न प्रकार है :–

उपज बढाने हेतु संवाद बैठके –

क ,स	गांव का नाम	नुक्कड बैठक	ग्राम संगठन की बैठक	सम्भागी
1	बामूदा	5	2	25
2	घेरकापुरा	6	2	47
3	बीचकापुरा	7	3	70
4	गजसिंहपुरा	5	2	45
5	अलवतकी	9	1	10
6	चौवेकी	10	1	100
	कुल योग	42	11	297

ग्राम सेवक द्वारा प्रशिक्षण –

क,स	गांव का नाम	सम्भागी
1	चौवेकी	**35**
2	अलवतकी	**25**
3	गजसिंहपुरा	**17**
	कुल योग	**77**

बीज वितरण

क ,स	गांव का नाम	किसानो कि संख्या	बीज की मात्रा कि,ग्रा मे	जमीन बीघा मे
1	आमरेकी	6	175	7
2	बामूदा	29	725	29
3	राहिर	21	525	21
4	चौवेकी	17	625	24.50
5	अलवतकी	12	312.50	12.50
6	गजसिंहपुरा	6	157.50	6
कुल योग		91	2520	100

डांग क्षेत्र मे गेहू की फसल को बढाने के प्रयासो मे जब मंथन चिन्तन हुआ तो डांग के नाले वाले खेतो मे जहा नालो के रिज मे बनी पोखर कमान्ड मे बने पैगारो से मोस्चर वाले खेत होने के साथ खाद भी प्रयाप्त पत्तो व घास से बना खाद की मार व ताल पोखरो के उपर वाले जहा ईजन से पानी पहुॅचाया जा रहा है वहॉ के खेतो की स्थिति जल्दी सूक जाना, जड कम गहराई तक जाना आदि स्थिति है इन सबको ध्यान मे रखकर खेतो के विशेषज्ञो, ग्रामीणो व खेती से सम्बंधित ग्राम सेवको की सलाह के अनुसार एक मत होकर किसानो को जोत पानी देने के लिए अपनी समझ का आदान प्रदान करने हेतु बैठके की और बीज का चयन करके बीज उपलब्ध करवाया ग्राम सेवक के साथ किसानो के संवाद हेतु शिविर आयोजित किये 05 गांवो मे यह प्रयास किये जिससे अच्छा खासा परिवर्तन आया है ।

3. उचित जल प्रबंधन :—

वित्तीय वर्ष 2021—22 खासकर ग्राम गौरव संस्थान का समय अपने प्रयासो से आ रहे ग्रामीणो की आजीविका को और बेहतरीन बनाने मे क्या जतन हो सकते है इस पर प्रयास करते हुऐ रचनात्मक कार्यो की श्रृखंला मे वर्षाजल वन मृदा संरक्षण मे ताल, पोखर, पैगारा निर्माण से एक छत पत्थर वाली नाले की जमीन पैगारा निर्माण से हुए मृदा संरक्षण से दो फसलीय खेत तैयार हो रहे है और ताल, पोखरो के निर्माण से बंजड व असिंचित जमीन की सिंचाई हो रही है बंजड को किसान अपनी मेहनत से काश्त काबिल कर ताल पोखरो से सिंचाई कर खरीब मे बाजरा ज्वार और रबी मे गेहू सरसो की फसले बोते है सिंचाई मे पोराणिक काल मे तो पुराने अवशेषो के अनुसार ताल पोखरो अर्दचन्द्राकार मिटटी से बनी संरचनाओ की पाल के उस हिस्से मे जहॉ से नीचे के सारे खेतो मे गिरवटी से पानी पहुच सके वहॉ पाल के नीचे चुना से नाली और भराव क्षेत्र की तरफ नाली को जोडते हुऐ चोकोर अन्दर से करीब चार ×चार फुट के आकार की मिटटी की पाल की ऊचाई के अनुरूप कोठी बनाकर पानी की तरफ हर एक फुट पर एक छेद रख कर आवश्यकता अनुसार खोलकर पिलाई करते जिससे नीचे के खेतो की ही पिलाई सम्भव है डांग मे ग्राम गौरव संस्थान के गठन कर्ता सदस्यो द्वारा 90 के दशक से डांग की विध को समझकर उत्थान मे समाज के साथ किये अनुसंधान मे वर्षाजल वन मृदा संरक्षण को प्राथमिकता देने के निर्णय के अनुसार समाज मे जन जागृती लाकर समाज की पौराणिक विधाओ के अनुरूप ताल पोखर पैगाराओ से बढी पानी की उपलब्धता से पिलाई क्षेत्र को बढाने पर ईजनो का इस्तेमाल व धोरा पाईपो से करना प्रारम्भ किया डांग के दुर्गम क्षेत्र मे समाज के कठिन जतनो के उत्कृष्ट परिणामो को गुणात्मक बढाने के लिए धर्मपाल सत्यपाल लिमिटेड के सराहनीय सहयोग से जिसमे ताल पोखर पैगारो की बढोतरी के साथ पानी की बचत मे हस्ती पाईप व फव्वारा का प्रयोग शुरू किया है यह प्रयोग के तोर पर प्रारम्भ हुआ पांच गांवो मे समूह तालवार मोहल्लावार थोकवार ग्राम संगठन की सुविधा के अनुसार समूह बनाकर संस्थान आर्थिक मदद करके उपलब्ध करवाये जिनका अच्छा असर आ रहा है ।

क्र.सं.	गांव का नाम	स्प्रिगकिलर एवं हस्तीपाईप सेट संख्या	किसानो की संख्या	सिंचित जमीन	परियोजना राशी	हितग्राही राशी
1	घेरकापुरा	1	2	30 बीघा	31980	8000
2	बीचकापुरा	1	2	35 बीघा	31980	8000
3	गजसिंहपुरा	6	12	150 बीघा	191880	48000
4	बामूदा	3	9	125 बीघा	95940	24000
5	अलवतकी	2	6	90 बीघा	63960	16000
कुल योग		13	31	430 बीघा	415740	104000

4. गरीब भूमिहीन विधवा असहाय परिवारो के आजीविका संवर्धन कार्यक्रम ।

गांवो मे ऐसे परिवार जिनके पास खेती करने के लिए जमीन नही है गांव मे विधवा महिला हाथ पैर से विकलांग खनन कार्य से सिलिकोसिस की बीमारी से ग्रस्त हो उनके जीवन स्तर को सहज सुगम करने मे सहयोग करने मे ग्राम संगठन के साथ संवाद करके उनके क्या व्यवसाय हो सकते है तय करके उनके ऐसे परिवारो की प्राथमिकता तय करके उनके व्यवसाय के लिए मदद की जिसका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रमांक	लाभार्थी का नाम	गॉव का नाम	राशि	स्थापित व्यवसाय
1	अमरसिंह पुत्र श्री शंकर	अलवतकी	20000	भैंस
2	रामस्वरूप	अलवतकी	20000	भैंस
3	सुरेश पुत्र रामफल	अलवतकी	20000	दुकान
4	ठाकुर सिंह पुत्र रतनलाल	अलवतकी	20000	भैंस
5	श्रीफल पुत्र रामनारायण	अलवतकी	20000	भैंस
6	रामकेश पुत्र प्रभु	अलवतकी	20000	खेत प्लेन
7	दिनेश पुत्र हल्के	अलवतकी	20000	भैंस
8	रूपसिंह पुत्र प्रकाश जाटव	अलवतकी	20000	भैंस
9	बच्चू पुत्र बलवन्त	अलवतकी	20000	भैंस
10	कमरसिंह पुत्र विरजू	चौवेकी	20000	चार दीवारी
		कुल योग	200000	

5. महिला सशक्तिकरण :–

ग्राम गौरव संस्थान के ग्रामीण आजीविका सुदृढ करने के जतनों में भौतिक बदलाव के साथ साथ सामाजिक चेतना स्थापित की ओर कार्य वढ रहा है। ये बहुत ही महत्वपूर्ण चरण समाज में स्थापित हो रहा है। क्योकि अभी प्राकृतिक संसाधनों के साथ समाज के समन्वय का हरांशः हुआ है। जिसके चलते वातावरण वदलाव जैसी समस्याओं की चुनौतियॉ समाज को स्वीकार करने के लिये प्रेरित होना पड रहा है। ऐसे में ऐसी चुनोतियों को ललकारने के लिए समाज को सम्पूर्ण जैविक विविधता व वन संपदा के संरक्षण के लिए दायित्व लेना होगा। ग्राम गौरव संस्थान को अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में रचनात्मक कार्यो में ताल, पोखर, पैगारा, जैसी संरचनाओं का निर्माण किया है। इन कार्यो से प्रत्येक रूप से खाद्यान व पेयजल आपूर्ति के साथ–साथ कुपोषण व शोषणमुक्त होकर गॉव ,समाज उभर रहा है। शिक्षा स्वास्थ्य के लिये भी ठोस निर्णय होने लगे है। इन कार्यो में महिलाओं का अप्रत्यक्ष रूप से

सहयोग रहता है। पर ग्राम गौरव संस्थान समाज के इन कार्यो के निर्माण से लेकर भविष्य में रख रखाव , उपयोग , विस्तार, व कार्य की सघनता के लिये समाज के संस्कारों में इन सव को स्थापित करने के लिये महिलाओं की प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी हो। इसमें आगे चलकर महिला पुरूषों में इन सव का संरक्षण की विविधता को अपने सामर्थ्य के अनुसार दायित्व सम्भालते हुए इन कार्यो को अविरलता प्रदान करें। इस लिए वर्ष 2021—22 में सक्रिय रूप से महिलाओं की भागीदारी वढाने के प्रयास तीव्र किये गये।

5.1 — महिलाओं को गॉव के सर्वांगीन विकास में निर्णायक भूमिका में स्थापित करने के प्रयासों में महिला कार्यकर्ताओं के द्वारा ताल, पोखर, पगारा निर्माण की आवश्यकता और निर्माण के वक्त उसकी देखरेख जनसहयोग इकट्ठा करने से लेकर गॉव में समूहवार बैठके की जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है—

क्रमांक	गॉव का नाम	गतिविधी	बैठक संख्या	सम्भागी महिला
1	अलवतकी	महिला समूह की बैठक	18	162
2	ठैकला की झोंपडी	महिला समूह की बैठक	7	70
3	अमावरा	महिला समूह की बैठक	13	130
		कुल योग	38	362

5.2 महिलाओं ने रचनात्मक कार्यो की तकनीकि में सहभागिता निभाने हेतु महिलाओं को प्रेरित करके निर्मित संरचनाओं के स्थान पर पहुंचकर निर्माण कार्यो में सुझाव दिये।

क्रमांक	गाव का नाम	संरचना का नाम	संभागीय महिलाओं की संख्या
1	अलवतकी	तीर वाली पोखर	7
2	अलवतकी	काखन वाली पोखर	5
3	अलवतकी	खिरकारी वाली पोखर	9
4	रायवेली	छेंडवाला ताल	9
5	अलवतकी	गणपत वाली पोखर	10
		कुल योग	40

5.3 गॉव को स्वाबलम्बन की ओर अग्रसर करने के लिये ग्रामकोष के प्रति चेतना जाग्रत के अन्तर्गत गॉव में आय का घर में रख रखाव करने में महिलाओं की दक्षता जग जाहिर है। ग्राम गौरव संस्थान में अपने कार्य क्षेत्र के गॉवों में महिला ग्रामकोष जैसी व्यवस्था के लिये गॉव में महिला पुरूषों के साथ संवाद स्थापित किये है। जिसमें गॉव वार नुक्कड वैठकों का दौर जारी रहा। महिला पुरूषों में इस विषय को समझने की गंभीरता अभी गॉवों में चर्चाओं में है। वर्ष 2021–22 में निम्न गॉवों में महिला ग्रामकोष को लेकर संवाद स्थापित हुआ है–

गॉव का नाम	नुक्कड वैठकों की संख्या	सम्भागी महिला
बरकी	15	180
अलवतकी	12	150
गजसिंहपुरा	15	100
रायवेली	10	50
दौलतपुरा	15	80
खातेकी	13	90
दौलतिया	4	20
रायवेली जगमनकी	3	15
दयारामपुरा	3	15
राहिर	9	30
नरेकी	8	20
कुल योग	107	750

5.4 महिलाओं द्वारा जनप्रतिनिधियों के सामने गॉव की समस्या रखवाना – महिलाओं का आत्मबल बढाने के प्रयासों में गॉव की समस्याओं को सूचिबद्ध करके क्षेत्रीय जनप्रतिनिधीयों से गॉव की समस्याओ के निदान के लिये वार्ता के लिये प्रेरित करना व प्रार्थना पत्र आदि देकर गॉव की समस्याओं से अवगत करवाकर प्रेरित किया जिसका सकारात्मक प्रभाव रहा।

6. पशुधन विकास – महिलाओ को पशुधन विकास के कार्य से जोडना :– ग्राम गौरव संस्थान के कार्यक्षेत्र में कृषि व पशुपालन दो आय के प्रमुख साधन है। कृषि की उपज बढाने के लिये कार्यक्षेत्र में वर्षाजल व मृदा संरक्षण कार्य होना अनिवार्य है। इसी प्रकार पशुपालन जो कि कार्यक्षेत्र के ग्रामीणों की नकदी की पूर्ति में अहम भूमिका रखता है। इसका पौराणिक काल में उत्तम रखरखाव और बीमारियों के निजात दिलाने की विधाओं की ओर पर्याप्ती की गवाह ग्रामीण क्षेत्र में जन स्त्रोतियों से लगती है पर वर्तमान में पशुओं का रखरखाव व सामान्य बीमारियो का ईलाज ना तो स्थानीय स्तर पर अच्छा है ना ही आधुनिक स्तर का कोई प्रयास साकार होता नही दिख रहा है। ग्राम गौरव संस्थान में अपने कार्यक्षेत्र के गावों में वित्तीय वर्ष 2021–22 में पशुपालक महिला पुरूषों को पशुओं की उपस्थिति में बीमारी को समझाना सामान्य ईलाज व टीकाकरण आदि का प्रशिक्षण दिलाया जो निम्नवत वर्णित है।

क्र.	शिविर का स्थान	प्रशिक्षणार्थी पशुपालक संख्या	पशुसखियों की संख्या	उपचारित पशु	दवाई का नाम
1	गजसिंह पुरा	88	13	622	FMD टीकानीलजान, PPR गलघोटू, टीकाकरण
2	अलवतकी	52	19	464	पैरासीटामोल, हिमालय बत्तीसा
3	ठेकला की झोंपडी	58	10	309	हीमेंक्स, तारपीन तेल, कीडों का तेल
4	आमरेकी	15	0	97	ET का टीका, पानाखुर
5	चौवेकी	33	12	287	बायोट्रीम पोटेशियम परमानेन्ट
6	मानिकपुरा	30	0	288	……………….,……………….,………………..
7	कसियापुरा	28	0	111	……………….,……………….,………………..
8	बामुदा	0	21	0	……………….,……………….,………………..
9	घेरकापुरा	0	15	0	……………….,……………….,………………..
10	मरमदा	0	11	0	……………….,……………….,………………..
11	दौलतिया	17	0	155	……………….,……………….,………………..
12	बरकी	26	0	372	……………….,……………….,………………..
13	सैमरी	20	0	186	……………….,……………….,………………..
14	रायवेली	22	0	134	……………….,……………….,………………..
	कुल योग	85	101	3025	

6.1 अजोला घास के प्लान्ट लगाकर पशुओ को हरा चारा उपलब्ध करवाना – अजोला घास जैसी प्रजातियों के लिए प्रेरित करके अजोला घास लगाने और उसके रख रखाव का प्रशिक्षण करवाकर अजोला घास की क्यारी तैयार करवायी जो निम्न प्रकार है–

क्रमांक	गॉव का नाम	क्यारियों की संख्या	प्रशिक्षणार्थीयों की संख्या
1	चौबेकी	6	20
2	अलबतकी	10	30
3	ठैकला की झोंपडी	4	18
4	गजसिंहपुरा	7	25
	कुल योग	54	186

7. शिक्षा :–

ग्राम गौरव संस्थान में अपने कार्यक्षेत्र के गावों में अपने काम के उत्कृष्ट परिणामों के महत्व सहित गॉवों में ऐसी उत्तम जानकारियॉ जो आने वाली पीढीयों की गहरी जानकारी में रहना अतिआवश्क है। साथ ही बालकों में अपनी अभिव्यक्ति, हस्तकला को उभारने, खेलों में प्रतिभाओं को उभारने के लिये दो से तीन घंटे बंडर रूम जैसी केन्द्र संचालित किये इन केन्द्रों में बालकों को पर्यावर्णीय सोच पर मंथन करने के लिये पेडो के चित्र व भिन्न भिन्न पेडों से मिलने वाले लाभ व प्रकृति के चक्र में वन संपदा की मौजूदगी के लाभ को बालकों को खेलों में सिखाने की कोशिश की है। बालकों के द्वारा सार्वजनिक जगहों पर बृक्षारोपण आदि कार्य भी करवाये गये है। संस्थान ने सक्रिय रूप से चारा बंडर रूम संचालित किये है। बंडर रूम के संचालन में में केन्द्रवार बालकों की उपस्थिति व वृक्षारोपन , चित्रों का प्रकार निम्नवत रहा है–

क्र.	केन्द्र का नाम	केन्द्र संचालक का नाम	बालकों की संख्या	अभिव्यक्ति उभारने में सहभागी बालक	पेड लगाने वाले बालकों की संख्या
1	सुक्कापुरा	गुलाव सिंह	20	—	50
2	बामूदा	हंसराम	25	—	0
3	अलवतकी	ऋतु गुप्ता	40	—	0
4	धोधाकी	सियाराम	35	—	10
		कुल योग	120		60

8. बीज संधारण केन्द्र संवर्धन कार्य ।

ग्राम गौरव संस्थान अपने कार्यक्षेत्र के गावों में किसानों का ध्यान अपना खाद अपना बीज व उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त करने की ओर आकर्षित करते हुए प्रारम्भिक तौर पर परियोजना के तहत किये गये बीज वितरण को सवाया वापिस लेकर एक बीज संग्रहण व्यवस्था कायम करने के लिए एक भवन की मरम्मत करवाकर बीज संग्रहण केन्द्र स्थापित करने के लिये मरम्मत करवायी। खरीब की फसल के लिये दिये हुए बीज का वापिस संग्रहण भी किया गया। जो बीज संग्रहण केन्द्र में संग्रहित है। जिसका विवरण निम्न प्रकार से वर्णित है ।

क्रमांक	गॉव का नाम	किसानों की संख्या	धान की मात्रा	रखने का स्थान
1	घेर का पुरा	37	450	बीज अनुसंधान केन्द्र गजसिंहपुरा
2	बीच का पुरा	85	600	बीज अनुसंधान केन्द्र गजसिंहपुरा
3	बामूदा	24	280	बीज अनुसंधान केन्द्र गजसिंहपुरा
4	मानिक पुरा	19	258	बीज अनुसंधान केन्द्र गजसिंहपुरा
5	पाटौर	1	12	बीज अनुसंधान केन्द्र गजसिंहपुरा
कुल योग		166	1600	